8. कारक

कारक का शाब्दिक अर्थ है– क्रिया को पूर्ण रूप देना। संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के क्रिया शब्दों के साथ जोड़ने वाले शब्द कारक कहलाते हैं। कारकीय संबंधों को प्रकट करने वाले चिह्न कारकीय चिह्न या परसर्ग होते हैं। सार्थक वाक्यों की रचना के लिए कारक शब्दों की आवश्यकता अनिवार्य है।

शिक्षण-संकेत

- ❖ छात्रों से पृष्ठ 37 पर दिए वाक्य पढ़वाएँ। तदुपरांत आप वाक्यों का अंतर बताते हुए कारक की उपयोगिता तथा प्रयोग समझाएँ।
- ❖ बताएँ, कारकों को प्रकट करने वाले शब्द कारक-चिह्न कहलाते हैं। कारक चिह्नों को परसर्ग भी कहते हैं।
- ❖ कारक के भेदों तथा उनके चिह्नों के बारे में छात्रों को बताएँ तथा पृष्ठ 38-40 पर दिए गए भेदों एवं उनके उदाहरणों को पढ़ें-पढ़वाएँ।
- ❖ बीच-बीच में छात्रों से कारक के किसी भेद से संबंधित प्रश्न पूछें।
- ❖ कर्म कारक तथा संप्रदान कारक का अंतर स्पष्ट करते हुए समझाएँ कि इन दोनों का विभक्ति चिह्न 'को' है पर कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है तथा संप्रदान में किसी को कुछ देने का भाव प्रकट होता है। जैसे–
  रमा को रमन ने बुलाया। (कर्म कारक)
  रमा ने रमन को उपहार दिया। (संप्रदान कारक) पृष्ठ 39 पर दिए अन्य उदाहरणों से समझाएँ।
- ❖ उदाहरण द्वारा छात्रों से प्रश्न पूछकर जाने कि वे कर्म कारक और संप्रदान कारक का अंतर भली-भाँति समझ गए हैं या नहीं।
- ❖ करण कारक और अपादान कारक का अंतर स्पष्ट करने के लिए पृष्ठ 40 पर दिए वाक्यों को पढ़ें और समझाएँ– करण कारक का प्रयोग साधन के रूप में होता है तथा अपादान कारक का प्रयोग अलग होने, किसी से तुलना करने, भय आदि प्रकट करने के लिए किया जाता है।
- ❖ छात्रों से कारक के भेद चिह्नों सहित बताने को कहें। प्रत्येक छात्र को बोलने का अवसर दें।
- ❖ बीच-बीच में छात्रों से कुछ बातचीत करते रहें जिससे पाठ में मनोरंजकता बनी रहे।
- ❖ अभ्यास के मौखिक प्रश्नों के उत्तर छात्रों से बताने को कहें। लिखित प्रश्नों के उत्तर जाँचें।